***प्रश्न- श्रीनिवास का जीवन परिचय दें ? एवं संगीत में किये हुए कार्यों का वर्णन करें।***

***उत्तर-*** *राग तत्व विवोध के लेखक श्रीनिवास हैं जिसे उसने सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखा। सन् 1650 में पंडित अहोबल ने संगीत परिजात नामक ग्रंथ में वीणा के 36" खुले तार पर बारह स्वरों की स्थापना कि और प्रत्येक स्वर के तार की लंबाई निकली, किन्तु उनका वर्णन कई स्थलों पर अस्पष्ट था। श्रीनिवास ने अहोबल के मत की पुष्टि की और अपने इस छोटे से ग्रंथ में उनके अस्पष्ट स्थलों को स्पष्ट किया। इसलिए जब कभी वीना के तार पर स्वरों की स्थापना की बात आती है तो श्रीनिवास का नाम सामने आता है। श्रीनिवास और अहोबल के पूर्व किन्हीं दो श्रुतियों की दूरी श्रुतियों द्वारा आंकी जाती थी, किन्तु श्रीनिवास के सत्प्रयत्नों से वैज्ञानिक आधार तार की लंबाई मानी जाती है।*

*इस ग्रंथ की रचना कब हुई यह अज्ञात है, किन्तु पुस्तक को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि इसकी रचना संगीत पारिजात के बाद हुई। इसके आठ अध्याय हैं। पहले अध्याय में ईश वंदना, दूसरे में श्रुति विवेचन, तीसरे में शुद्ध, विकृत और संवादी स्वरों का वर्णन, चौथे अध्याय में ग्राम मूर्छना, पांचवें में गमक, छटवें में मेल, सातवें में 101 रागों का वर्णन, आठवें में श्रुति निर्णय है।*

*श्रीनिवास के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नही होती है। उनका जन्म नरपतिपुर के आस पास मन जाता है।उन्हें संगीत की पुस्तकों से इतना लगाव था कि उन्हें चुराकर भी संग्रह करते थे। इसप्रकार उन्होंने संगीत पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह बना लिया था, किन्तु दुर्भाग्यवश उसमें आग लग गयी और उनका सम्पूर्ण साहित्य नष्ट हो गया इससे वे अत्यंत दुःखी हुए, किन्तु उसे चोरी का प्रायश्चित समझ कर संतोष कर लिया।*